अध्याय - 5

उपसंहार

Maulana Azad Library, Aligrh Muslim University

अध्याय – 5

उपसंहार

चतुर्दशपदीकार त्रिलोचन का प्रदेय :–

छायावाद के बाद वाली पीढ़ी के कवियों में त्रिलोचन शास्त्री का महत्वपूर्ण स्थान है । प्रगतिवादी काव्य धारा के कुछ चुने हुये कवियों में उनका नाम निःसंकोच लिया जा सकता है । त्रिलोचन जी प्रगतिवादी धारा के सशक्त हस्ताक्षर हैं । शास्त्री जी निराला के बाद और उन्हीं की परम्परा में आने वाले बहुत ही समर्थ कवि हैं ।

त्रिलोचन शास्त्री ने अपनी कविताओं में चतुर्दशपदी (सॉनेट) काव्य रूप का सबसे अधिक प्रयोग किया है । उन्होंने इस दिशा में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य किया है। सॉनेट में जैसे कवि त्रिलोचन के प्राण ही बसते हैं । त्रिलोचन से पहले भी हिन्दी कविता में कतिपय कवियों ने सॉनेट काव्य रूप का बीजवपन किया । परन्तु त्रिलोचन ही सॉनेट के पहले सफल कवि हैं । शायद ही कोई ऐसा कवि होगा जिसका कोई छंद या काव्य रूप उसका पर्याय बना हो ।

हिन्दी में सॉनेट अंग्रेजी परम्परा से आया है । यह चौदह पंक्तियों का छंद है। कुछ अतालवी सॉनेटकारों ने इसे आठ और छः पंक्तियों में विभाजित किया है जबकि अंग्रेजी सॉनेटकारों ने तीन चतुर्दशपदी और अंत में तुकान्त द्विपदी के रूप में विभक्त कर अपनाया है । सॉनेट शेक्सपीयर स्पैंसर और मिल्टन का प्रिय काव्य– रूप रहा है ।

हिन्दी कविता में त्रिलोचन ने इस विदेशी छंद के शिल्प को अपनी तरह से सिद्ध किया है । यही कारण है कि कहीं भी त्रिलोचन का काव्य सॉनेट के शिल्प से बाधित नही हुआ है, क्योंकि त्रिलोचन ने विदेशी काव्य के इस शिल्प को अपनी जातीय परम्परा एवं अपने जातीय रागों में ढाल कर किया है ।

आज हिन्दी की काव्य परम्परा में जैसे चौपाई से तुलसीदास, पदों से सूरदास, दोहों से बिहारी का नाम अप्रत्याशित रूप से सामने आ जाता है, उसी प्रकार हिन्दी कविता में सॉनेट का नाम आते ही त्रिलोचन सामने मूर्तिमान हो जाते हैं ।

हिन्दी कविता में जहाँ तक शब्दों की सजगता और शिल्पगत कसाव का प्रश्न है, वह निराला के बाद हिन्दी कविता में कथ्य, शिल्प और अर्थ – सभी धरातलों पर

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

त्रिलोचन में देखते ही बनता है । चौदह पंक्तियों की प्रतिबद्धता वाले काव्य – रूप में अपनी समग्र चेतना और अनुभव – जगत को वाणी देने की चुनौती कवि के सामने एक बड़ी चुनौती थी । यहाँ कवि को कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक कहना होता है और यदि इसमें कवि किसी भी धरातल पर चूक गया, तो फिर सफलता की सीढ़ी उसके हाथ से सदा सर्वदा को खिसक जाती है । अतः इस विधा के ग्रहण में कवि को भावानुभूति एवं भावाभिव्यक्ति – दोनों स्तरों पर अत्यंत ही जागरूक और चौकन्ना रहना पडता है । उसमें कुशल शिल्पी जैसे हस्तलाघव की अपेक्षा की जाती है । कहना न होगा कि त्रिलोचन शास्त्री ने इस साहस भरी चुनौती को स्वीकार ही नहीं किया उसे सफलता के उच्चतम् शिखर पर आसीन भी किया है ।

त्रिलोचन जी ने प्रस्तुत विधा के प्रणयन में अंग्रेजी परम्परा के दोनों रूपों – पैट्रार्कन और शेक्सपीरियन – का न केवल सफलतापूर्वक प्रयोग किया है, अपितु मूलतः अंग्रेजी कविता से प्रभावित इस काव्य रूप को उन्होंने अपने ढंग से मोड़ कर इसे विशुद्ध जातीय एवं भारतीय रूप प्रदान किया है । डॉ. एस. नारायण के स्वर में स्वर मिलाकर कह सकते हैं कि वे हिन्दी में चतुर्दशपदी के ऐसे पर्याय बन गये हैं, कि उनमें विदेशीपन की गंध तो कहीं छू तक नहीं गयी । हिन्दी में चतुर्दशपदी की सृजना में जैसा साफ सुथरा पन एंव जैसी चुस्त – दुरूस्त बनावट और कसावट त्रिलोचन जी में दीख पड़ती है वैसी अन्यत्र दुर्लभ ही है ।[1] त्रिलोचन जी ने न केवल चतुर्दशपदियों की सफल सृजना की है, अपितु प्रयोगों की नव्यता की जीवंत संस्पर्श देकर उन्हें प्राणवान एंव धारदार भी बनाया है जिसका सोदाहरण सविस्तार विवेचन अन्यत्र किया जा चुका है । त्रिलोचन जी ने अंग्रेजी के प्रस्तुत काव्य – रूप का हिन्दी में उसी निपुणता एवं विदग्धता के साथ प्रयोग किया है, जितना शमशेर ने हिन्दी में गजल का । डॉ. केदारनाथ सिंह के शब्दों में कहें तो "हिन्दी भाषी जाति के साथ त्रिलोचन के सम्बन्ध की जिस अभिन्नता की बात बार – बार कही जाती है उसका एक विशिष्ट रूप उनके "सॉनेटों" में दिखाई पडता है । सॉनेट जैसा की सब जानते हैं – हिन्दी में

---

1. आधुनिक हिन्दी कविता और विदेशी काव्य रूप – डॉ. एस. नारायण, पृष्ठ – 74

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

अंग्रेजी कविता के प्रभाव से आया है । पर त्रिलोचन ने रोला छंद के मात्रिक संगीत में ढालकर इसका एक अलग ढांचा तैयार किया है, जो पूरी तरह हिन्दी की आन्तरिक लय से मेल खाता है । सॉनेट के लिये इस विशिष्ट छंद में निहित सम्भावनाओं की खोज त्रिलोचन की हिन्दी भाषा की प्रकृति की पहचान का एक उदाहरण है ।"[1]

जैसा की संकेत किया जा चुका है द्विवेदी युगीन हिन्दी कविता में आयोध्या सिंह उपाध्याय "हरिऔध" सरीखे साहित्यकारों ने कतिपय चतुर्दशपदियों का प्रणयन कर इस विधा के बीज – बपन का कार्य किया है । आधुनिक काल में चतुर्दशपदी की रचना में प्रसाद, पंत एंव निराला ने खूब रूचि दिखाई । सृष्टि के कण – कण में अपने प्रेमास्पद प्रियतम की परोक्ष सत्ता का आभास पाने वाले बहुमुखी प्रतिभा के धनी महाकवि जयशंकर प्रसाद ने हिन्दी कविता में सर्वधा एक नवीन युग का द्वार खोला । वे कविता की इस नवीन धारा के प्रवर्तक एवं अन्यतम कवि है ।

प्रसाद जी की चतुर्दशपदियों का प्रकाशन समय – समय पर "इन्दु" में होता रहा, एकाध अन्यत्र भी प्रकाशित हुयी ।किन्तु पुस्तककार रूप में बाद में उनमें नाटकों के समस्त गीतों के साथ उनकी चतुर्दशपदियों का "प्रसाद संगीत" नामक संग्रह में समाकलन हुआ है । प्रसाद ने कुल मिलाकर 27 चर्तुशपदियों की रचना की हैं, जिनमें पांच चतुर्दशपदियाँ उनके नाटकों के गीतों में – "अजात शत्रु" में दो "स्कन्दगुप्त" में दो और "चन्द्रगुप्त" में एक – सम्मिलित हैं । शेष बाईस चतुर्दशपदियाँ स्वतन्त्र रूप से लिखी एवं प्रकाशित हुयी हैं ।[2] प्रसाद जी की एक चतुर्दशपदी यहाँ अंकित है –

"क्यों जीवनधन । ऐसा ही न्याय तुम्हारा क्या सर्वत्र
लिखते हुए लेखनी हिलतीं कॉपता जाता है यह पत्र ।
औरों के प्रति प्रेम तुम्हारा, इसका मुझको दु:ख नहीं,
जिसके तुम हो एक सहारा उसको भूल न जाव कहीं ।[3]

निराला हिन्दी में स्वछन्दतावाद के प्रबल समर्थक रहे हैं । उन्होंने न केवल छंदों के बंधो को तोड़ा है अपितु इस दिशा में नवीन व सफल मौलिक यात्राएं की हैं।

---

1. डॉ. केदारनाथ सिंह – उस जनपद का कवि हूँ , के फ्लैप से उद्घृत ।
2. आधुनिक हिन्दी कविता और विदेशी काव्य रूप – डॉ. एस.नारायण, पृ. 70
3. प्रसाद संगीत – जयशंकर प्रसाद , पृष्ठ 140

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

निराला ने 15 चतुर्दशपदियाँ लिखी हैं जो निराला ग्रन्थावली की तीसरे वोल्यूम में संकलित हैं । निराला जी की चतुर्दशपदियों का वर्ण्य – विषय व्यापक है । वे प्रेम – प्रकृति सौन्दर्य एवं देशभक्ति आदि भावनाओं से परिपूर्ण है।

सुभद्राकुमारी चौहान के "मुकुल तथा अन्य कविताएं" नामक संग्रह में उनकी तीन चतुर्दशपदियाँ – "जीवन फूल", "आराधना", तथा "आगमन" संग्रहीत हैं । उनकी चतुर्दशपदी के वर्ण्य – विषय – प्रेम और दार्शनिक हैं ।

छायावादोत्तर युग की हिन्दी कविता में प्रस्तुत विधा की सृजना की दिशा में कवियों में पर्याप्त उत्साह देखने को मिलता है । इस युग के कवियों में डॉ. रामविलास शर्मा इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं । इनकी चतुर्दशपदियाँ उनके प्रगीतात्मक संग्रह "रूपतरंग" में संग्रहीत हैं । दो सॉनेट "तारसप्तक" में भी हैं । उन्होंने अपनी चतुर्दशपदियों में पैट्रार्क के मॉडल का सफलतापूर्वक प्रयोग किया है ।

डॉ. प्रभाकुमार माचवे का योगदान भी चतुर्दशपदी की रचना में अनुपेक्षणीय है । प्रभाकर माचवे ने पैट्रार्क तथा शेक्सपीयर के मॉडल को अपने तरीके से काट–छांट कर अपने अनुकूल ढाल कर अपनी राह बनाई है ।

नरेन्द्र शर्मा की चतुर्दशपदियों में एक ही भाव अथवा एक ही विचार अन्तर्निहित रहता है, जो अपने में पूर्ण होता है । उनकी एक चतुर्दशपदी का उदाहरण दृष्टव्य है –

"अग्नि का कर आचमन संकल्प कर मानव
तम अनल के सिंधु भी बढ़ता चलेगा तू ।
तू नहीं वह चीज जो जल राख हो जाए ,
नित्य निखरेगा मनुज जितना जलेगा तू ।" [1]

छायावादोत्तर युग के हिन्दी कवियों में प्रस्तुत विधा की दृष्टि से त्रिलोचन शास्त्री ने सबसे अधिक ख्याति अर्जित की है । त्रिलोचन जी मार्क्सवादी कवि होते हुये भी एक विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी हैं । उन्होंने अपनी रचना – धर्मिता को पार्टी–

---

1. हंस मई – 1942, पृष्ठ 834

Maulana Azad Library, Aligh Muslim University

प्रोपेगन्डा की कुचक्र से सावधानी पूर्वक बचाया है । त्रिलोचन जी का सृजन कहीं भी सिद्धान्त की व्याख्या का न तो हथियार ही बनता है और न प्रकट रूप से अपने में कहीं सिद्धान्तों को मुखरित ही होने देता है । यही कारण है, कि उनकी कविताएं काव्यत्व की कसौटी पर आस्वाद्य ठहरती हैं । त्रिलोचन जी का कवि व्यक्तित्व परम्परा के विनत स्वीकार के साथ साथ प्रयोगों के लिये कभी अनुदार नहीं बना है, अपितु उसमें सर्वदा एक उदार अवकाश बना रहता है । उनके काव्य में चतुर्दशपदी की सर्वाधिक व्याप्ति इसका भव्य निदर्शन है ।

हिन्दी कविता में "दिगन्त" के प्रकाश के साथ शास्त्री जी ने "सॉनेट" को अपनी भावाभिव्यंजना का सफल वाहक बनाया है ।[1] "दिगन्त" पूरी तरह से उनकी चतुर्दशपदियों का ही संग्रह है । "दिगन्त" का एक सॉनेट दृष्टव्य है –

"इधर त्रिलोचन सॉनेट केही पथ पर दौड़ा
सॉनेट सॉनेट सॉनेट सॉनेट क्या कर डाला ।"[2]

इसके बाद "उस जनपद का कवि हूँ", "अनकहनी भी कुछ कहनी है" यह दोनों भी उनके चतुर्दशपदियों के संकलन हैं । "उस जनपद का कवि हूँ" में कुल 106 चतुर्दशपदियाँ हैं । "तुम्हें सौंपता हूँ" नामक संग्रह में भी त्रिलोचन जी की 31 चतुर्दशपदियाँ हैं । त्रिलोचन शास्त्री ने इसके बाद "गुलाब और बुलबुल" नामक संग्रह का प्रकाशन किया। जिसमें 28 चतुर्दशपदियाँ संग्रहीत की गयी हैं । "ताप के ताये हुए दिन" में कुल 10 चतुर्दशपदियाँ हैं ।

सॉनेट में त्रिलोचन ने अधिकांश उपलब्ध रूपों का प्रयोग किया है । पेट्रार्कीय सॉनेट भी उन्होंने लिखे और शेक्सपीयर सरणि के सॉनेट भी, बल्कि उनमें कहीं – कहीं इन्होंने स्पैन्सर और सरे – दोनों की तुक योजनाओं का प्रयोग भी किया है । जिनका सोदाहरण विवेचन शोध में यथास्थान किया जा चुका है ।

---

1. आधुनिक हिन्दी कविता और विदेशी काव्य – रूप – डॉ. एस.नारायण, पृष्ठ – 74
2. दिगन्त – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ – 1

Maulana Azad Library, Aligh Muslim University

त्रिलोचन जी का कवि – कर्म एक दीर्घ – काल का साक्षी रहा है । एक लम्बे अंतराल में प्रणीत इनकी चतुर्दशपदियों में हमें उनके रचनात्मक विकास के अनेक पड़ावों से साक्षात्कार होता है । त्रिलोचन जी के चतुर्दशपदी कवि – कर्म के प्रतिपाद्य पर अवधान केन्द्रित करने से पता चलता है कि उनका वर्ण्य – विषय व्यापकता एंव विविधता लिये हुये है ।

त्रिलोचन शास्त्री की आरम्भिक चतुर्दशपदियाँ प्रेम – परक हैं । उनकी सबसे अधिक चतुर्दशपदियाँ प्रेम पर आधारित हैं । उन्होंने प्रेम – भावना का चित्रण अनेक कोणों से किया है जैसे – साहचर्य, श्रम, रूप और सौन्दर्य, गार्हस्थिक और आत्मिक प्रेम । प्रेम – परक चतुर्दशपदी का एक उदाहरण दृष्टव्य है –

"हम तुम दोनों आज दूर हैं, चाहें भी तो
पास नहीं आ सकते हैं, वैसे कहने को
कुछ भी कह लें, मन समझा लें , पर रहने को
साथ अजी छोड़ो भी, अपने मन की भी तो ।" [1]

त्रिलोचन शास्त्री के मुख्य वर्ण्य विषय प्रकृति सौन्दर्य भी हैं । सौन्दर्य की चेतना जैसे कवि के हृदय पर स्थाई रूप से छा गयी है । त्रिलोचन के काव्य में प्रकृति चित्रण के अनेक सॉनेट भरे हुये हैं जैसे – प्रकृति का निर्मल रूप, नया प्रभात, मौसम, प्रकृति और मनुष्य और प्रकृति के रूप और प्रभाव आदि हैं ।

त्रिलोचन शास्त्री ने सामाजिक जीवन की अनेक विविधताओं को प्रस्तुत किया है जैसे – महानगरीय सभ्यता, मध्यवर्गीय परिवार, अकेलापन, संघर्ष जन्य, जन शक्ति, अवसाद करूणा, अटूट विजयभाव, शोषण, कर्मठता और वेदना आदि हैं ।

त्रिलोचन शास्त्री ने इन सब चतुर्दशपदियों के अतिरिक्त ग्रामीण जीवन, राजनीतिक चेतना, आत्म चित्रण, नागार्जुन, आदि को चतुर्दशपदी का वर्ण्य विषय बनाया है ।

---

1. अनकहनी भी कुछ कहनी है – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 74

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

इनके अतिरिक्त छायावादोत्तर हिन्दी कविता में नेमीचन्द्र जैन, भारतभूषण अग्रवाल, डॉ. केदार नाथ सिंह, रामइकवाल सिंह राकेश, बालकृष्ण राव, प्रभृति कवि साहित्यिकों ने इस विधा के सृजन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है ।

सॉनेट को लेकर यह कथन कम महत्वपूर्ण नहीं है कि त्रिलोचन ने एक विदेशी परम्परागत छंद में अपनी सहज व सजग भाषा द्वारा जिस जन राग को प्रवाहित किया है वह आज हिन्दी काव्य जगत की एक मूल्यवान विरासत है । त्रिलोचन तुलसी और निराला की भांति जनभाषा की समस्त गूंजों व अनगूंजों से पूरी तरह परिचित है। जिस सहज सजगता के साथ सॉनेटों में त्रिलोचन ने अपने कवि कर्म का निर्वाह किया है, इससे तो यह पूरी तरह भासित होने लगा है कि सॉनेट हिन्दी का ही परम्परागत छंद है ।

"सब कुछ, सब कुछ, सब कुछ, सब कुछ, सब कुछ भाषा
भाषा की उंगली से मानव मानव हृदय हो गया ।" [1]

त्रिलोचन अवधी भाषा के विद्वान हैं । भाषा विज्ञान में उनकी बहुत अच्छी गति है । भाषाओं के आपसी सम्बन्ध के बारे में वे बहुत बातें करते हैं । [2]

त्रिलोचन ने अपने सॉनेटों के लिये नयी भाषा नहीं गढ़ी, बल्कि पहले से मौजूद जीवित भाषा को उसकी जीवन्तता में ग्रहण किया – उस भाषा में उन लोगों को बोलने का मौका दिया जिन्हें अब तक बोलने का मौका नहीं मिला था । त्रिलोचन खडी बोली की हिन्दी भाषा और साहित्यिक अभिव्यक्ति के आधुनिक इतिहास में एक कड़ी बनकर आते हैं ।

जैसा कि अन्यत्र संकेत किया जा चुका है – त्रिलोचन के सॉनेटों में शब्दों की जो सजगता और शिल्पगत कसाव देखने को आता है, वह हिन्दी कविता में कथ्य, शिल्प व अर्थ की दृष्टि से त्रिलोचन में ही दृष्टव्य हे । त्रिलोचन के सॉनेटों में भाषा की मजबूत पकड़ के साथ – साथ छंद , लय और शब्दों की पहचान अनायास ही देखी जा सकती है ।

---

1. साम्य प्रगतिशील विचारों की संवाहक पत्रिका – विजयगुप्त, पृ. 163
2. वर्तमान साहित्य अगस्त , 1992, सं. विभूति नारायण राय, पृ. 6

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

संस्कृतनिष्ठ शब्दों के साथ साथ अवधी भाषा के अनेक शब्दों का प्रयोग उन्होंने पहली बार किया है ।

त्रिलोचन जी का जो अधिकार सॉनेट के रूप और उसमें प्रयुक्त रोला छंद पर है, वह गजलों के रूप और बहारों पर नहीं । त्रिलोचन जी ने परम्परा प्राप्त छंदों का काफी प्रयोग किया है । त्रिलोचन की दृष्टि आश्चर्यजनक रूप से साफ है । उन्होंने अधिकांश सॉनेटों में मुक्त छंद का प्रयोग किया है ।

"बरस रहे रस बरस रहे रस
गरज गरज घन ये
धरामयी धरा हो आयी
रंग रंग की ले सुघराई ।"[1]

आधुनिक हिन्दी कविता की प्रवृत्ति बिम्बों के माध्यम से बात कहने की है, कुछ कवि बिम्ब पर बिम्ब लादते चलते हैं । सॉनेट में ऐसा करना सम्भव नहीं है, इसलिए त्रिलोचन बिम्बों की झालरें नहीं बांधते । बिम्ब उनके यहाँ बहुत कम हैं। उन्होंने एक दो बिम्बों का सहारा लिया है । उनमें उनको उभारने की अद्‌भुत क्षमता है।

"दर्शन हुये पुनः दर्शन, फिर मिलकर बोले,
खोला मन का मौन, गान प्राणों का गाया,
एक दूसरे की स्वतंत्र लहरों को पाया,
अपनी अपनी सत्ता में जैसे पर तोले ।" [2]

त्रिलोचन के बिम्बों में उनका प्रकृति – प्रेम भरा हुआ है ।

त्रिलोचन शास्त्री अपनी भावाभिव्यक्ति के लिये जिन प्रतीकों का चुनाव करते हैं, वे शेष प्रगतिवादियों से भिन्न नहीं है । उन्होंने कहीं – कहीं अत्यंत सहज ढंग से प्रतीक – पद्धति का हल्का सहारा लेकर प्रकृति के रूपों और क्रिया व्यापारों के माध्यम से जीवन – स्थितियों की व्यंजन की है ।

---

1. त्रिलोचन के बारे में – गोविन्द प्रसाद , पृ0 136
2. वही, पृष्ठ 176

Maulana Azad Library, Aligrh Muslim University

त्रिलोचन जी ने वातावरण को जीवन्त बनाने के लिये ध्वनि योजना का भी सफल प्रयोग किया है ।

त्रिलोचन शास्त्री सॉनेटों में आडम्बर और अलंकार बाजी के विरूद्ध रहे हैं। त्रिलोचन शास्त्री के सॉनेटों में मुहावरे बाजी भी नहीं है ।

रूप और शिल्प पर त्रिलोचन जी ने बहुत बड़ी – बड़ी बातें न की हों, लेकिन देखा जाये तो विभिन्न विधाओं और भिन्न – भिन्न रूपों के तहत जितने प्रयोग त्रिलोचन जैसे प्रगतिशील कवि ने किये हैं, शायद ही दूसरों ने किये हों।

त्रिलोचन के चतुर्दशपदी काव्य का एक विहंगम दृष्टि से सर्वेक्षण करने के पश्चात इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है, कि त्रिलोचन शास्त्री ने आलोच्य विधा की सृजना में पर्याप्त परिष्कार के साथ परिवर्तन एवं परिवर्धन किये हैं । चतुर्दशपदियों की पंक्ति के योग की योजनाओं में – जैसे – अष्टपदी, षट्पदी, तीन चतुष्पदी और एक द्विपदी, एक चतुष्पदी और एक दस पदी और सात द्विपदियाँ – अन्तर होते हुये भी सब में एक ही भाव और एक ही विचार ही अन्विति कहीं भी विच्छिन्न नहीं होने पाती । कुल मिलाकर अंग्रेजी के इस काव्य रूप का त्रिलोचन शास्त्री ने उन्नत प्रयोग किया है ।

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

मुख्य ग्रन्थ

1. अनकहनी भी कुछ कहनी है : त्रिलोचन शास्त्री – राधाकृष्ण, प्रथम संस्करण, 1985, 2/38, अन्सारी रोड, दारेयागंज नई दिल्ली – 110002

2. अरघान : त्रिलोचन शास्त्री – यात्री प्रकाशन, सी–3/169, यमुना विहार, दिल्ली , प्रथम संस्करण – 1983

3. उस जनपद का कवि हूँ : त्रिलोचन शास्त्री – राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रथम संस्करण – 1981, दरियागंज नई दिल्ली ।

4. गुलाब और बुलबुल : त्रिलोचन शास्त्री – वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण – 1985, 4697 / 521ए, दारेयागंज नई दिल्ली – 110002

5. ताप के ताए हुए दिन : त्रिलोचन शास्त्री – सम्भावना प्रकाशन, प्रथम संस्करण – 1980, रेवती कुंज, हापुड ।

6. तुम्हें सौंपता हूं : त्रिलोचन शास्त्री – राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रथम संस्करण – 1985, 2/38, अन्सारी रोड, नई दिल्ली – 110002

7. दिगन्त : त्रिलोचन शास्त्री – राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रथम संस्करण – 1985, 2/38, अन्सारी रोड, दारेयागंज , नई दिल्ली – 110002

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

सहायक ग्रन्थ

1. आधुनिक हिन्दी कविता और विदेशी काव्य रूप : डॉ. एस.नारायण – मिथिला प्रकाशन, 18/4, सराय बाला, अलीगढ़ – 202001 प्रथम संस्करण – 1993
2. छायावादोत्तर हिन्दी काव्य की सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि : डॉ. कमला प्रसाद पाण्डेय, रचना प्रकाशन
3. त्रिलोचन के बारे में : गोविन्द प्रसाद – वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1994
4. हिन्दी उपन्यास शिल्प : बदलते परिप्रेक्ष्य – डॉ. प्रेम भटनागर, अर्चना प्रकाशन, जयपुर, 1968
5. हिन्दी उपन्यास की शिल्प विधि का विकास : डॉ. (श्रीमती) ओम शुक्ला – अनुसधान प्रकाशन, आचार्य नगर कानपुर प्रकाशन काल – 1964

पत्र पत्रिकाएँ

1. आलोचना त्रैमासिक : सं नामवर सिंह – अंक 86, वर्ष – 37 जुलाई – सितम्बर 1988
2. आलोचना त्रैमासिक : सं नामवर सिंह – अंक 89, वर्ष 37, अप्रैल – जून 1989
3. आलोचना त्रैमासिक : सं नामवर सिंह – अंक 82, वर्ष 36, जुलाई – सितम्बर 1987
4. आलोचना त्रैमासिक : सं. नामवर सिंह – अंक 83, वर्ष 36, अक्टूबर – दिसम्बर 1987

Maulana Azad Library, Aligrh Muslim University

5. भाषा त्रैमासिक : सितम्बर 1981 – सम्पादक – जगदीश चतुर्वेदी, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, शिक्षा तथा संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार

6. वर्तमान साहित्य : अगस्त 1992, वर्ष – 9, अंक – 11, विभूति नारायण राय, लखनऊ, अशोक ऋषि राज, 13/130, इन्दिरा नगर ।

7. सापेक्ष :

8. साम्य . प्रगतिशील विचारों की संवाहक पात्रेका – सम्पादक – विजय गुप्त, साम्य मध्य प्रदेश प्रगतिशील लेखक संघ शीतला वाड आम्बेकापुर (म.प्र.) द्वारा प्रकाशित एवं जारी

9. हंस : मई 1942

10. हंस : फरवरी 1952 वर्ष

11. The collected works of O.G. Rossetti Vol. 1 London 1890

कोष – सूची

1. ऐंसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका – वाल्यूम – XXV

2. ऐंसाक्लोपीडिया अमारेकाना

3. मानवेकी पारिभाषिक कोष – साहित्य खण्ड, सं. डॉ. नगेन्द्र

4. वृहत हिन्दी कोष (ज्ञान मण्डल लिमिटेड, बनारस) सं. कालेका प्रसाद ।

5. A Background to the study of English Literature – Dr. B. Prasad.

6. Popular Oxford Encyclopaedia illustrated Dictionary.

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University